

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 25 जनवरी, 2022

राष्ट्रीय मतदाता दविस

देश के मतदाताओं को चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने हेतु हर वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दविस मनाया जाता है। इस वर्ष इस दविस का 12वाँ संस्करण मनाया जा रहा है। इस वर्ष के राष्ट्रीय मतदाता दविस की थीम, 'चुनावों को समावेशी, सुगम और सहभागी बनाना', चुनाव के दौरान मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी को सुवर्धन करने तथा सभी श्रेणियों के मतदाताओं के लिये पूरी प्रक्रिया को सरल व एक यादगार अनुभव बनाने के लिये भारत नरिवाचन आयोग की प्रतबिद्धता पर ध्यान केंद्रित करती है। भारत नरिवाचन आयोग का गठन 25 जनवरी, 1950 को हुआ था। भारत सरकार ने राजनीतिक प्रक्रिया में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये नरिवाचन आयोग के स्थापना दविस पर '25 जनवरी' को वर्ष 2011 से 'राष्ट्रीय मतदाता दविस' के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। 'राष्ट्रीय मतदाता दविस' मनाए जाने के पीछे नरिवाचन आयोग का उद्देश्य अधिक मतदाता, विशेष रूप से नए मतदाता बनाना है। इस दविस पर मतदान प्रक्रिया में मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता का प्रसार किया जाता है। मतदान का उच्च प्रतशित जीवंत लोकतंत्र का प्रतीक माना जाता है। जबकि मतदान का नमिन प्रतशित राजनीतिक उदासीन समाज की ओर इशारा करता है। वस्तुतः देश में मौजूद वधितनकारी तत्त्व अक्सर ऐसी स्थिति का फायदा उठाने का प्रयास करते हैं जिससे न केवल लोकतंत्र के अस्तित्व के लिये खतरा पैदा होता है बल्कि इससे देश की समस्त राजनैतिक व्यवस्था भी उथल-पुथल होने की आशंका उत्पन्न हो जाती है।

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय मतदाता दविस का आयोजन करना, नए मतदाताओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने हेतु भारत नरिवाचन आयोग द्वारा उठाए गए वभिन्न प्रयासों के बीच एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा।

आर. नागास्वामी

पुरातत्व विभाग के पहले नदिशक आर. नागास्वामी का 23 जनवरी, 2022 को उम्र संबंधी जटिलताओं के कारण नधिन हो गया। वह 92 वर्ष के थे। पुरातत्व, वास्तुकला, पुरालेख, मुद्राशास्त्र, प्रतमि विज्ञान, दक्षिण भारतीय कांस्य और मंदिर अनुष्ठानों से संबंधित नागास्वामी ने COVID-19 महामारी के दौरान तमिलनाडु में मंदिरों को बंद करने के वचार का समर्थन किया था। नागास्वामी का जनम इरोड ज़िले के कोडुमुडी में हुआ था। उन्हें तमिल और संस्कृत का गहरा ज्ञान था। उन्होंने मदरास विश्वविद्यालय से संस्कृत में एमए की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय से भारतीय कला वषिय पर पी.एच.डी. की। वभिन्न क्षमताओं के साथ पुरातत्व विभाग की सेवा करने के बाद वह वर्ष 1966 में इसके नदिशक बने और वर्ष 1988 में अपनी सेवानिवृत्तिक इस पद पर रहे। उन्होंने वर्ष 1983 में एक कतिब 'मास्टरपीस ऑफ अरली साउथ इंडियन ब्रॉजस' लिखी और विश्व शास्त्रीय तमिल सम्मेलन को चहिनित करने के लिये तमिलनाडु सरकार हेतु एक पुस्तक का संकलन किया। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें मामलपुरम से संबंधित हैं, जो ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, उत्तरमेरुर और गंगईकोडचोलपुरम द्वारा प्रकाशित हैं। उन्होंने तमिल में भी कतिबें प्रकाशित की थीं।

20वाँ ढाका अंतरराष्ट्रीय फलिम समारोह

ढाका में 20वें अंतरराष्ट्रीय फलिम समारोह में पी.एस वनिंदराज नरिदेशित फलिम 'कूङ्गल फ्रॉम इंडिया' ने एशियाई फलिम प्रतियोगिता खंड में सर्वश्रेष्ठ फलिम का पुरस्कार जीता। इसके अलावा फलिमों के लिये दिये गए 17 पुरस्कारों में चार और भारतीय प्रवषिटियों भी शामिल थीं। जयसूर्या को रंजीत शंकर नरिदेशित फलिम सनी के लिये सर्वश्रेष्ठ अभनिता का पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखक इंदरनील रॉयचौधरी और सुगाता सनिहा को भारत-बांग्लादेश फलिम मायर जॉजाल हेतु तथा विशेष दर्शक पुरस्कार एमी बरुआ नरिदेशित फलिम सेमखोर को दिया गया। नेपाल से सुजीत बदिारी नरिदेशित फलिम 'आईना झ्याल' को सर्वश्रेष्ठ नरिदेशक का पुरस्कार मिला। बांग्लादेश के सूचना और प्रसारण मंत्री हसन महमूद ने ढाका में राष्ट्रीय संग्रहालय सभागार में आयोजित एक समारोह में पुरस्कार प्रदान किये। ढाका अंतरराष्ट्रीय फलिम समारोह में 70 देशों की 225 फलिमें प्रदर्शित की गईं।